।। ब्रह्मस्तूती ।।

मारवाडी + हिन्दी

✻

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

✻ बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ ब्रह्मस्तूती ||

परापरी से सतस्वरुप ब्रम्ह,पारब्रम्ह व जीव ब्रम्ह है । यह ब्रम्हस्तुती–यह सतस्वरुप ब्रम्ह की स्तुती है–जीव ब्रम्ह या पारब्रम्ह की स्तुती नही है ।

नमो नांव गुण पार, पार तेरा कुण पावे ।।
नमो गत अवगत, नमो तूं भेव बतावे ।। १ ।।

(सतस्वरुप)ब्रम्ह आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपके गुणोका पार नही है । संसार मे आपके गुणो का पार कौन पा सकता । आपकी गती अवगत है संसार के लोगो के समजने के परे है । संसार के लोगो का आपकी गती समजने का भेद आपही बता सकते इसलीये सतस्वरुपी ब्रम्ह आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१।।

नमो पाप खोगाळ, नमो प्रमेसर प्यारा ।।
नमो नांव बिन छेह, नमो बिड्द सिर भारा ।। २ ।।

सतस्वरुपी ब्रम्ह आप सर्व जीवो के पाप नाश करने वाले है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप सभी जीवो के पाप मिटाने वाले है सतस्वरुपी परमेश्वर है इसलीये आप सभी को प्यारे है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपके नाम का छेह नही है याने आपका नाम पाप नाश कर देने के पराक्रम मे अनंत है याने उसका अंत नही है । आपका नाम सभी पापो का नाश करता ही करता है । इसलीये आपको नमस्कार है । सभी प्राणी मात्र को सुख देने के बिड्द का भार आपके मस्तक पर है इसलीये आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।२।।

नमो नेट श्रीराम, नमो नारायण नीका ।।
नमो करण करतार, नमो केवळ हर टीका ।। ३ ।।

आप श्रीराम याने सतस्वरुपी राम आपको नमस्कार है । (श्रीराम यह रामचंद्र के लिए नही कहा है)आप सभी नरो के नारायण है (यह नारायण विष्णी के लिए नही कहा है)याने सभी जीवो को सुख देवाल परमात्मा है,आपको नमस्कार है । आप जीवो मे सुख प्रगट करनेवाले करतार है,आपको नमस्कार है । आप केवल रामजी सभी के उपर है,आपको नमस्कार है । ।।३।।

नमो नांव निसाण, नमो सब तुज सरावे ।।
नमो निरंजण राय, नमो संतन मन भावे ।। ४ ।।

आपका नाम निशाण के सरीखा है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपकी सभी सराहना करते है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपको मनुष्यो सरीखे चौऱ्याशी लाख योनीमे डालनेवाले इन्द्रीये नही है । आप निरंजन सतस्वरुपी ब्रम्ह है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप सभी जीवो को चौऱ्यासी लाख योनीसे निकालने वाले है इसलीये आप सतस्वरुपी संतो के मनको प्यारे लगते है, आपको नमस्कार है,नमस्कार है

। ।।४।।

नमो आप सेहे जीत, नमो तुही तूं होई ।।
नमो धरण आकास, तुज बिन ओर न कोई ।। ५ ।।

सभी जीवो का आधार आप है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । सब जगह आपही आप है, आपको नमस्कार है,नमस्कार है । पृथ्वी से लेकर आकाश तक आपके शिवाय और कोई नही है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।५।।

नमो नांव निरधार, नमो टेके बिन करता ।।
नमो पुरातम पीव, नमो केवळ मन हरता ।। ६ ।।

आपका नाम निराधार है,आप जीवब्रम्ह, इच्छामाया या पारब्रम्ह किसीके भी आधार बिना स्वयम् के आधार के है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप बिना टेके के ऐसे स्वयम् के टेके से करतार है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप आदी अनादिसे सभी जीवोके मालीक है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप केवल है,आपमे माया का जरासा भी अंश नही है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप जीवो के मन के सभी दुख हरन करनेवाले है, आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।६।।

नमो हरी हर राम, नमो संतन सुखदाई ।।
नमो ज्हां त्हां तुज, सकळ घट रह्या समाई ।। ७ ।।

आपही हरी है,आप ही हर है,आप ही राम है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप सभी सतस्वरुपी संतो को सदा के लिए महासुख देनेवाले है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । जहाँ वहाँ आपही आप है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । सभी घटो मे समाये हुअे है, आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।७।।

नमो बिंधुसन भरम, नमो सब क्रम मिटावन ।।
नमो तात प्रतपाळ, नमो भौ माय लंघावण ।। ८ ।।

जीवोके सभी भरमो का व कर्मो का नाश करनेवाले आपही है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप प्रतीपाल करनेवाले सतस्वरुपी पिता है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप जीवो को भवासागर से पार लगाने वाले है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।८।।

नमो आस आसमान, नमो हर अंतरजामी ।।
नमो संतन सब सिस, नमो केवळ हर स्वामी ।। ९ ।।

आसमान तक सब आपकी आशा लगाअे हुअे है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप सभीके अंतरयामी है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । सभी संतोके शिष पर आपही बिराजमान है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप माया के परे के केवल,हर,स्वामी हो, आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।९।।

नमो मेहर जगदीश, नमो हर ग्रभ अहारी ।।
नमो पलक दर्याव, नमो सब मांड पसारी ।। १० ।।

आप जगदीश है,सर्व संसार के इश है,आपकी सभी पे मेहर है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपही गर्भ के अंदर अहार पहुँचानेवाले है । आप को नमस्कार है,नमस्कार है । आप एक पल मे समुद्र भरने वाले है और एक ही पल मे समुद्र को खाली करनेवाले है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप ने एकपल मे सारी दुनिया पसारी है और आप एक ही पल मे सारी दुनीया मीटा सकते है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१०।।

नमो निरंतर माय, नमो सायब हर सांचा ।।
नमो अलख हर आप, नमो त्यारण हर बाचा ।। ११ ।।

हे सिरजणहार आप निरंतर याने सदा हर आत्मा में है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप सच्चे साहेब है आप सच्चे हर है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप अलख याने आपकी गती लखनेमे नही आती अैसे आप हर है,आप राम है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप बचनोसे सबका उध्दार करनेवाले हर है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।११।।

नमो रूप अणरूप, रूप तेरा सब होई ।।
नमो ध्यान निजधाम, नमो केवळ हर सोई ।। १२ ।।

आपका कोई रुप नही है,आप बिना रुपके है परन्तु जगत के सभी रुप आपके ही रुप है, आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपका ध्यान करनेवाले आप का निजधाम याने सतस्वरुपी सतगुरु का ध्यान करते है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप केवल हर है । आप मे किसीभी प्रकार की माया नही है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१२।।

नमो नमो गुरूदेव, नमो मुक्ति गत दाता ।।
नमो ब्रह्म निर्धार, नमो सुख सरण बिधाता ।। १३ ।।

सतस्वरुपी गुरुदेव आपको नमस्कार है,नमस्कार है । सतस्वरुप की मुक्ती देनेवाले सतस्वरुप की गती देनेवाले आपही दाता है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप जीवब्रम्ह,पारब्रम्ह के सरीखे सतस्वरुप का आधार लेनेवाले ब्रम्ह नही है । आप निराधार सतस्वरुपी ब्रम्ह है । आपको खुद का आधार है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप आपके शरण मे आनेवाले संतो को सुख लीख देनेवाले विधाता है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१३।।

नमो निरंजण राय, नमो आकार बिन पाणी ।।
नमो देव सिर देव, नमो जुग जुग जुगाणी ।। १४ ।।

आप निरंजण,निराकार है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आकाश,वायु,अग्नी,जल,

धरती सभी मे आप ही आप है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप सभी देवो के सतस्वरुप देव है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । असंख युगोसे सर्व जगत को आपको ही आधार है आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१४।।

नमो राम पर पीड ,नमो रमता सब माही ।।
नमो आप करतार, नमो केवळ हर क्वाही ।। १५ ।।

आप दुसरों के कष्ट हरने वाले है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । सब मे रमने वाले है। आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप ही श्रृष्टी करता व आप ही केवल हर कहाते हो । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१५।।

नमो निरंजण देव, नमो पुरण अबिनाशी ।।
नमो ब्रह्म प्रब्रह्म, नमो हरी घट घट बासी ।। १६ ।।

आप निरंजण देव पूरण व अविनाशी है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप ही सतस्वरुपी ब्रम्ह है व आपही सतस्वरुपी पारब्रम्ह है व घट घट में वास करने वाले हरी आप ही है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१६।।

नमो अचल अद्वैत, भेद जन बिरळा पावे ।।
नमो असंगी संग, रंग बिन रंग दिखावे ।। १७ ।।

आप अचल अद्वेत है। आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपका भेद बिरले ही संत पाते है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आप सबके साथ होकर सबसे अलग है । आप बिना रंग के रंग बताते है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१७।।

सुखराम दास बंदन करे, नमो ब्रह्म भगवान ।।
आतम तत्त अरूप हे, पुरण पद निर्बाण ।। १८ ।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोलते है की हे सतस्वरुप ब्रम्ह भगवान मै आपको प्रणाम करता हुँ । आत्मा मे रहने वाले तत्त याने सतस्वरुप परमात्मा को कोई रुप नही है,वह अरुप है वह ने अछंर ध्वनी स्वरुप है । आपका मायामुक्त ऐसा पुर्णपद है,निर्वाण पद है, आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।१८।।

नमो नमो प्रब्रह्म, अचल निज नांव अरूपं ।।
नमो अखे अद्वैत, प्रम गुरू सत स्वरूपं ।। १९ ।।

आप परमगुरु है,आदि से सभी आत्माओके गुरु है, सभी सृष्टी के गुरु है । आप सतस्वरुप है आपका स्वरुप कभी भी मीटता नही आपको नमस्कार है, नमस्कार है । सतस्वरुप पारब्रम्ह आपको नमस्कार है,नमस्कार है । आपका पद अचल है,कभी भी नाश न होनेवाला है । आपका नाम निजनाम है,वह अखंडीत ध्वनीस्वरुप है,जगत के नाम समान मिटनेवाला नही है । आपका रुप अरुप है मायाके चर्म चक्षुसे दिखनेवाला रुप नही है आपका रुप सतस्वरुप के दिव्य चक्षुसे दिखनेवाला रुप है । आप अक्षय है कभी क्षय

होनेवाले नही है । आप अद्वैत है मतलब माया के समान द्वैत नही है । ।।१९।।

नमो ब्रह्म अनाद, आद अगाध गुसांई ।।
तीन लोक चहुं चख, सकळ व्यापक हर सांई ।। २० ।।

हे सतस्वरुप ब्रम्ह आप आदि अनादि से सभी आत्माओके,इच्छामाया के,पारब्रम्ह के स्वामी है आपको आपको नमस्कार है,नमस्कार है । तीन लोक मे चारो तरफ सर्वत्र आपही व्यापक है । आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।२०।।

नमो नमो सब माय, नमो सबही सुं न्यारा ।।
नमो प्रगट नही गुपत, छीपत नही लिपत लगारा ।। २१ ।।

आप सबमें भी है व सबसे अलग भी है । आप प्रगट है,गुप्त नही है,आप लेश मात्र भी नही छिपते है,आपको नमस्कार है,नमस्कार है । ।।२१।।

नमो नमो निर्बाण पद, निजानंद निश्चल पदा ।।
सुखराम दास वंदन करे, चरण कंबळ बंदु सदा ।। २२ ।।

आपके निर्वाण पद को नमस्कार है,नमस्कार है । वो पद निश्चल है व हंसको सदा आनन्द देनेवाला पद है आप है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि मैं आपके चरण कमल की वन्दना सदा ही करता हुँ । ।।२२।।

।। श्लोक ।।

धर्मों न कर्मों ।। ग्यानो न ताई ।। नही बाप मईया ।। बेना न भाई ।।
द्रिष्टो न मुष्टो ।। नामो न ठाँणा ।। क्हें इम सुखंग ।। ब्रह्म बखाणा ।। २३ ।।

आप धरम से,करम से,ग्यान से परे है । आपको मां बाप बहन व भाई नही है । आप न दृष्टि मैं आते है न मुठ्ठी में आते है । आपका कोई मुकाम नही है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि ऐसी सतस्वरुप ब्रम्ह की महीमा है । ।।२३।।

जातो न पातो ।। न्यातो न मेला ।। नही धुप रूपंग ।। संगी अकेला ।।
आबो न जाबो ।। केबो न काई ।। क्हे इम सुखंग ।। ब्रह्म गुसांई ।। २४ ।।

आपकी कोई जात नही है,आपकी कोई पात नही है व आपके कोई न्यातीवाले नही है व आपका किसी से मेल मिलाप नही है । आपका कोई धुप नही है व आपका कोई रुप नही है, ना आपका कोई संगी है आप किसी के साथ जाते भी नही व आते भी नही है व ना आप किसी को कुछ बोलते हो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है कि सतस्वरुप ब्रम्ह गुसाई ऐसा है । ।।२४।।

छोटो न मोटो ।। फोरो न भारी ।। नही केहन किमत ।। थाहा बिचारी ।।
जनम्यो न जननी ।। बंधु न मेला ।। क्हे इम सुखंग ।। ब्रह्म अकेला ।। २५ ।।

हे सतस्वरुप ब्रम्ह आप ना छोटे है,ना मोटे है,ना आप हलके है,ना भारी है । आपकी हिकमत कला कहने मे नही आती है व आपका धाग बिचारो मे नही आता है । आप न

जन्मे है,न आपकी कोई माता है,न आपके कोई बंधु है ना आपका किसीके साथ मेल मिलाप है आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की सतस्वरुप ब्रम्ह ऐसा अकेला है । ।।२५।।

घी साव पुस्पंग ।। जळ मीन पंथो ।। उडे बिहंग भंवरा ।। क्हां गेल संतो ।।
सेझाँस सुखंग ।। सो जीव जाणे ।। युं ब्रह्म सुखम् ।। कोई संत पिछाणे ।। २६ ।।

मुझे घी का स्वाद,पुष्प की गंध,जल में मछी का रास्ता,आकाश मे उडने वाले पक्षी व भंवरो का रास्ता कैसा है व सेज का सुख कैसा है यह कौन बताअेगा । अे तो जीसने जाना है वही बतायेगा । ऐसे ही सतस्वरुप ब्रम्ह के पद का सुख सतस्वरुपी संत ही जानते है,अन्य किसीको भी मतलब पारब्रम्ह,इच्छामाया,ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ती, अवतार,जगत के सभी लोग बाल भर भी नही जानते ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले । ।।२६।।

– इति ब्रह्म स्तुति समाप्त –